P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गॉधी जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

पुनीत शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षक प्रशिक्षण विभाग
मुलायम सिंह महाविद्यालय
कानपुर, उ.प्र., भारत

अर्जुन यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षण प्रशिक्षण विभाग
चौधरी नत्थू सिंह
यादव महाविद्यालय,
इटावा, उ.प्र., भारत

सारांश

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था उस राष्ट्र की प्रगति की सूचक होती है क्योंकि राष्ट्र के समग्र विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम शिक्षा को ही माना जाता है। व्यक्ति व समाज का विकास जितना शिक्षा पर निर्भर करता है उतना किसी अन्य पर नहीं। यही कारण है कि गॉधी जी ने एक दूरदर्शी शिक्षाविद् के रूप में कर्तव्य कर्म आधारित मूल्यवादी दृष्टिकोण से आच्छादित एक नवीन शिक्षा योजना जिसे बेसिक शिक्षा योजना या बुनियादी शिक्षा योजना या आधारभूत शिक्षा योजना कहते है, का विचार देश के सामने रखा। गॉधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक में निहित शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्तियों का विकास करना है। शिक्षा ऐसी हो जो बालक को एक अच्छा नागरिक बनाने के साथ–साथ उसे एक उत्पादक इकाई के रूप में विकसित कर सके। उन्होने पाठ्यक्रम में कलात्मक विषयों के साथ हस्तशिल्प को महत्वपूर्ण स्थान दिया। गॉधी जी ने बेसिक शिक्षा में किताबों के दुरूपयोग को गलत माना और रटने के बजाय करके सीखने पर बल दिया। महात्मा गॉधी के शैक्षिक विचारों पर चर्चा करता हुआ यह लेख हमें यह सोचने का अवसर देता है कि क्या उनके शैक्षिक विचार आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द : नई तालीम, परम्परागत कौशल, हस्तशिल्प, श्रम, स्वालम्बन, उत्पादकता।

प्रस्तावना

महात्मा गॉधी के शिक्षा सम्बन्धी विचार कल भी प्रासंगिक थे और आज भी प्रासंगिक है। इसका कारण यह है कि वे सार्वभौमिक है। गॉधी जी के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे कि हम सम्पूर्ण भारत के समग्र जन मानस को व्यवस्थित और उसकी संस्कृति तथा गौरव को सही ढंग से सही रूप में दर्शायें।

स्वतंत्र देश के स्वतंत्र एवं आदर्श नागरिक का निर्माण ही गॉधी जी का शैक्षिक दर्शन है। महात्मा गॉधी शिक्षा को एक व्यापक प्रक्रिया मानते थे। वस्तुतः शिक्षा वह है जो व्यक्ति में नीहित सभी पक्षों का बहुमुखी विकास करती है उनका दृष्टिकोण था कि शरीर, मन, हृदय और आत्मा के योग से मानव आच्छादित होता है। इसलिए शिक्षा के द्वारा हाथ मस्तिष्क और हृदय का विकास अवश्य किया जाना चाहिए। उन्होने लिखा भी है शिक्षा से मेरा आशय बालक और मनुष्य के शरीर मन और आत्मा के सर्वोत्तम विकास से है। उनका मानना है कि सम्पूर्ण मनुष्य के निर्माण के लिये तीनों के उचित और एक रस मेल की आवश्यकता होती है और वही शिक्षा की सच्ची व्यवस्था है।

गॉधी जी का मत है कि शिक्षा का अर्थ अक्षर ज्ञान नही हैं, बच्चा समस्त इन्द्रियों द्वारा और मन द्वारा अच्छा काम ले यही शिक्षा है। उनका मानना था कि एक सुन्दर घर से बेहतर कोई पाठशाला नहीं होती है और सदाचारी, चरित्रवान माता–पिता से बेहतर कोई शिक्षक नहीं होता बच्चों को केवल पढ़ना लिखना और कुछ गणित ही नहीं आनी चाहिये, बल्कि उनको अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में ज्ञान हो तथा कैसे उनकी उन्नति हो सकती है, इसके बारे में अनुभव भी प्राप्त होना चाहिए।

इसमें शक नहीं कि अक्षर ज्ञान से जीवन का सौंदर्य बढ़ जाता है, लेकिन यह बात गलत है कि उसके बिना मनुष्य का नैतिक, शारीरिक तथा

आर्थिक विकास हो ही नहीं सकता। उनके अनुसार शिक्षा वह है जो व्यक्ति को तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम बनाने के साथ–साथ उसके चरित्र का भी निर्माण कर सके क्योंकि चरित्र व शारीरिक आवश्यकताएँ एक दूसरे से जुड़ी है। यदि शिक्षा अपने तात्कालिक उद्देश्य शिक्षा के समर्थक थे। उनके अनुसार सभी बालकों की आत्मा समान है क्योंकि प्रत्येक में दैवीय तत्व विद्यमान है। परंतु व्यक्तित्व के शारीरिक व भावात्मक पक्ष उसे व्यक्तिगत अद्वितीयता प्रदान करते हैं। अतः शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व के तीनों पक्षों ज्ञान, भावना व कर्म का इस तरह विकास किया जाना चाहिए कि एक संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण हो सके। ज्ञानात्मक अथवा कर्म पक्ष का एकल विकास बुद्धिजीवी व श्रमजीवी का भेद उत्पन्न करता है। ज्ञानी कर्म को हेय मानने लगता है जबकि कर्मशील व्यक्ति ज्ञान पक्ष से दूर हो जाता है। एकपक्षीय विकास भावपक्ष के सम्यक विकास में अवरोध उत्पन्न करता है। अतः गॉधी जी ने इन सभी पक्षों के विकास हेतु कलात्मक विषयों के साथ–साथ पाठ्यक्रम में हस्तशिल्प को केंद्रीय स्थान प्रदान किया परन्तु उसी शिल्प को केन्द्रीय स्थान देने की बात कही गयी जिसमें निम्न विशेषताएँ हों।

1. जिसके माध्यम से शिक्षा प्रदान करना संभव हो।
2. जिसमें कई चरणों में कार्य होता हो।
3. इसका स्तर विद्यार्थियों के बढ़ते स्तर के साथ जटिल होता जाए। कच्चे माल के स्तर से शुरू होकर अन्तिम वर्ष में पूर्ण उत्पादन सम्भव हो सके।
4. उत्पादन सामाजिक आवश्यकतानुसार हो न कि प्रदर्शन मात्र हेतु।
5. क्षेत्रीय स्तर पर कच्चे माल की उपलब्धता के साथ ही तत्संबंधित परम्परागत कौशल भी उपलब्ध हो।

गॉधी जी मितव्ययी और सारगर्भित शिक्षा के पक्षधर रहे, वह तत्कालीन भारतीय समाज की गरीब व सरकारी रवैये से पूर्ण भिज्ञ थे। इसीलिये उन्होने शिक्षा को उद्योगपरक रखने की सलाह दी, ताकि शिक्षा के आवर्तक खर्चे विद्यालयों से निकाला जा सके। अनावर्तक स्वभाव के खर्चों के लिये उन्होने स्पष्ट किया कि यह खर्चा जनता या सरकारों से चन्दे के रूप में लिया जा सके, इस खर्च को विद्यालय नहीं उठायेगा। उन्होने स्पष्ट किया था कि विद्यालय केवल अन्न वस्त्र का खर्च ही उठायेंगे।

इस संदर्भ में गॉधी जी ने लिखा है कि हमारे जैसे गरीब देश में हाथ की तालीम जारी करने से दो हित सिद्ध होंगें उससे हमारे बच्चों की शिक्षा का खर्च निकल आयेगा और वह ऐसा धन्धा सीख जायेगा जिसको वह आगे के जीवन में उपयोग में लाकर अपनी आजीविका बड़े ही आराम से चला सकेगा। में सफल नहीं हो पाती तो अन्य उद्देश्य स्वतः असफल हो जाते हैं। अतः शिक्षा ऐसी हो जो बालक को आदर्श नागरिक बनाने के साथ ही एक उत्पादक इकाई के रूप में वातावरण को समझने की योग्यता प्रदान कर सके। इसीलिए वे जीवन द्वारा जीवन की

कालेकर ने बुनियादी तालीम को महात्मा जी का कल्पतरू कहा है क्योंकि इसमें सामाजिक विकास की सम्पूर्ण सम्भावनाएँ निहित हैं। बुनियादी शिक्षा में मातृभाषा, संगीत, चित्रकला, अंकगणित, सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विकास व शारीरिक शिक्षा को महत्व दिया गया है। संगीत व कला इसके अनिवार्य भाग हैं बुनियादी तालीम के दो आधारभूत तत्व हैं –

1. शिक्षा की निःशुल्कता व सार्वजनिकता
2. शिक्षा का आधार क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगो द्वारा जीवनयापन करने के लिए अपनाया गया उद्योग हो।

इसी आधार पर वर्धा में 1937 ई. में 22–23 अक्टूबर को आयोजित शिक्षा सम्मेलन में चार प्रस्तार पारित किए गए –

1. भारतवर्ष के सभी बालक–बालिकाओं को सात वर्ष की आयु तक (7–14) निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा दी जाए।
2. यह शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही प्रदान की जाए।
3. यह बालक के पर्यावरण से संबंधित हस्तकार्य को आधार मानकर दी जाए।
4. अध्यापकों का वेतन विद्यार्थियों द्वारा निर्मित वस्तुओं के विक्रय से निकालने का यत्न किया जाए।

शिक्षण पद्धति के संदर्भ में डायरेक्ट मैथड को उन्होने उपयुक्त माना है। वे चाहते थे कि पहले निरीक्षण फिर परीक्षण और फिर प्रयोग किया जाए। यही प्रासंगिक है क्योंकि बाल–जीवन का विकास तीन दिशाओं में तीन साधनों द्वारा होता है।

1. कुदरत संबंधी–निरीक्षण परीक्षण
2. मनुष्य संबंधी – समाज का परिचय
3. आजीविका संबंधी – उद्योग कुशलता

इसलिए उन्होने कार्य करके सीखने पर अधिक बल दिया। इस शिक्षा के अंतर्गत खेल व कार्य में विकल्प नहीं है क्योंकि सीखना जब कार्य के साथ होता है तो यह मानसिक संतुष्टि प्रदान करने के साथ ही कार्य के प्रति उत्तेजना व प्रसन्नता प्रदान करता है। बेसिक शिक्षा के अंतर्गत किताबों के प्रयोग को नहीं बल्कि उनके दुरूपयोग को गलत माना गया है। स्मृति की प्रक्रिया जरूरी है परंतु यह किताबों के माध्यम से हो यह जरूरी नहीं, क्योंकि शिक्षा का अर्थ रटना मात्र नही है। महात्मा जी ने अनुभव व सीखने की प्रक्रिया को आपस में जोड़ने हेतु सहसंबंध विधि को महत्वपूर्ण माना है। अतः शिक्षक के लिए

सहसंबंध के विज्ञान व कला को जानना जरूरी है जिससे वह विद्यार्थियों को अनुभवों से सीखना व ज्ञान व समझ स्तर से उनका संबंध स्थापित करना सिखा सके। ये अनुभव तीन क्षेत्रों–प्राकृतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण तथा उत्पादक कार्यक्षेत्र में प्राप्त होते है।

अनुशासन स्थापना हेतु वे शिक्षक के आचरण को प्रभावी मानने के साथ ही दो बातों को आवश्यक मानते थे – छात्र की अध्यापक के प्रति श्रद्धा तथा अध्यापक का छात्र के प्रति स्नेह व सहानुभूति। शिक्षा के सांस्कृतिक पक्ष को वे साहित्यिक पक्ष से अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। संस्कृति को शिक्षा का आधार तथा विशेषांग मानते हुए उन्होने मानव के प्रत्येक व्यवहार में इसकी छाप को आवश्यक माना। साथ ही शिक्षा में शारीरिक दण्ड का विरोध किया।

गॉधी जी ने शिक्षक को समाज का आदर्श व्यक्तित्व माना। उनका मानना था कि शिक्षक को सत्य का आचरण करने वाला व समाज सेवक होना चाहिए। व्यक्ति को यह कार्य व्यवसाय के रूप में नहीं अपितु समाज सेवा के रूप करना चाहिए। गॉधी जी छात्रों से भी अपेक्षा करते है कि वे ब्रहचर्य का पालन करे विद्यालयों के नियमों का पालन करे, समाज सेवा के कार्यो में भाग ले और आत्मनिर्भर बने। विद्यालयों के विषय में गॉधी जी का एक नया दृष्टिकोण था ये विद्यालयों को सामुदायिक केन्द्रों के रूप में विकसित करना चाहते थे तथा विद्यालयों को एक ऐसी कार्यशाला मानते थे यहॉ शिक्षक और शिक्षार्थी सभी श्रम करें, जहॉ हस्त कौशलों द्वारा वस्तुओं का निर्माण होकर विद्यालयों में निर्मित वस्तुओं से विद्यालयों का व्यय निकले वे आत्मनिर्भर बने।

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गॉधी जी के बाल शिक्षा सुझावों का अवलोकन किया जा सकता है। गॉधी जी ने अपना पूरा जीवन कर्मयोगी की भॉति व्यतीत किया। उनके विचारों में भी जो जीवन दर्शन मिलता है, वह उनके स्वयं के अनुभव ही थे। वह शिक्षा एवं शिक्षण से वंचित नहीं रहे। इसीलिये शिक्षा सम्बन्धी उनके समस्त विचार यथार्थवादी थे। जो कि व्यवहारिक शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

गॉधी जी के विचारों का विश्लेषण करने पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं –

1. शिक्षा का तात्पर्य शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास है।
2. उनकी शिक्षा पद्धति प्रयोग आधारित है।
3. बालक की रचनात्मक प्रवृत्ति को महत्व दिया गया है।
4. अनुशासन हेतु प्रेम, सहानुभूति व शिक्षक के चरित्र को प्रभावपूर्ण माना गया है।

अतः कहा जा सकता है गॉधी जी के अनुसार शिक्षा का तात्पर्य एक संतुलित व्यक्तित्व को एक आर्थिक इकाई के रूप में तैयार करना है।

भारतवर्ष एक ऐसा देश है जहॉ मानव संसाधन प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। परंतु तदनुरूप रोजगार के संसाधन उपलब्ध नहीं है। विद्यमान शिक्षा प्रणाली श्रम के अरूचि उत्पन्न करने वाली है। इन विषम परिस्थितियों में महात्मा गॉधी का शिक्षा दर्शन उत्तरोत्तर प्रासंगिक होता जा रहा है।

इस शिक्षा पद्धति के आधार पर विकसित पद्धति –

1. बालकों को कल्पनाशील, क्रियाशील व प्रयोगशील बनाएगी।
2. बालकों में चारित्रिक अनुशासन उत्पन्न होगा।
3. शिक्षित होने के बावजूद व्यक्ति मानसिक श्रम पर आधारित व्यवसाय के अभाव में तनावग्रस्त न होकर शारीरिक श्रमयुक्त किसी व्यवसाय को अपनाएगा।
4. रटने की प्रवृत्ति का ह्रास होगा तथा तर्क व चिंतन क्षमता का विकास होगा।
5. शिक्षक एवं छात्र संबंधों में मधुरता आएगी।

प्रासंगिकता

महात्मा गॉधी एक उत्कृष्ट शैक्षिक विचारक थे। उनके शिक्षा विषयक विचार भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धर्म एवं मूल्यों से अनुप्राणित है। गॉधी जी ने भारत की दशा का आकलन करके ही शिक्षा और कार्य में अद्भुत समन्वय करके बेसिक शिक्षा योजना का प्रणयन किया था। यह उनकी दूरदृष्टि एवं उन्नत प्रबन्धन विशेषज्ञता को प्रतिबिम्बित करता है।

1. शिक्षा के विषय में गॉधी जी की अपनी विशिष्ट दृष्टि एवं संकल्पना है जिसका आधार उनके स्वयं के द्वारा किए गए प्रयोग एवं अनुभव रहे हैं। विशेष बात यह सामने आई कि उनके शैक्षिक विचार देश के धरातल की वास्तविकताओं से सम्बन्धित है। शिक्षा द्वारा वे हाथ हृदय और मस्तिष्क का समन्वित विकास चाहते थे, जिसका आज पूर्णतः अभाव है।
2. गॉधी जी की नई तालीम की संकल्पना के मूल तत्वों में मातृभाषा में शिक्षण, सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा, शिक्षा में उद्यम पर जोर, शिक्षण में अनुबंध एवं समवाय, स्वावलंबन एवं चरित्र निर्माण तथा सामुदायिक जीवन प्रमुख आधार है। शिक्षा एवं स्थानीय परिवेश को वे जोड़कर देखते है। वर्तमान में इन सभी तत्वों की प्रासंगिकता को स्वीकार करते हुए, शैक्षिक गुणवत्ता एवं बदलाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना गया।
3. गॉधी जी ने शिक्षा को उत्पादकता से जोड़ने का जो अद्भुत कार्य किया उसका आश्रय लेकर ही वर्तमान शिक्षाविद् शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य तथा

कार्यानुभव की संयोजना का व्यवहारिक पक्ष तलाशने हेतु चिन्तनशील है।

4. गॉधी जी ने ज्ञान और अनुभव को अलग–अलग संदर्भों में व्याख्यायित किया है। अब यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाने लगा है कि ज्ञान और अनुभव दो अलग–अलग चीजे हैं। पाठ्यक्रम की संयोजना में अब ज्ञान और अनुभव को अलग–अलग करके स्थान दिया जा रहा है। यह गॉधी जी के शैक्षिक चिन्तन के कारण ही संभव हो सका है।
5. गॉधी जी की नई तालीम की संकल्पना सुदृढ़ शिक्षाशास्त्रीय सिद्धांतों यथा कार्य के माध्यम से ज्ञान का सृजन, समवाय एवं अनुबन्ध, स्थनीय परिवेश आधारित शिक्षण के साथ–साथ श्रम, स्वालम्बन, साधना तथा सामुदायिक जीवन पर आधारित होने से सदैव प्रासंगिक है।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि आज वैश्वीकरण के युग में गॉधी की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है वरन् विशेष रूप से भारतवर्ष के लिए और बढ़ती जा रही है। गॉधी जी ने बेसिक शिक्षा योजना में अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की जो संकल्पना बनायी उसको स्वतंत्र भारत के संविधान में स्थानापत्र किया गया। गांधी जी ने भारतीयकरण से युक्त जिस शिक्षा योजना का प्रणयन किया था। वह अत्यन्त बेजोड़ था। वर्तमान समय में पतनोन्मुख होते कुटीर–धन्धों, उद्योगों को गांधी जी के स्वदेशी भावना को अपनाकर पुर्नजीवन दिया जा सकता है। वास्तव में गांधी जी की प्रासंगिकता आज भी जीवंत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ0 ओ0 पी0 सिंह, शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन इलाहबाद*
2. *रमन बिहारी लाल व सुनीता पलोड, शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग आर लाल बुक डिपो मेरठ*
3. *डॉ0 रामशक्ल पाण्डेय, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2*
4. *प्रो0 सत्यमूर्ति , शिक्षा के विविध आयाम, महात्मा गॉधी का शिक्षा दर्शन, अरूण प्रकाशन, नई दिल्ली*
5. *शिवदत्त (2009), ''नई तालीम'' गांधी सेवा संध, वर्धा*
6. *काका कालेकर , 'गॉधी का रचनात्मक क्रान्ति शास्त्र'' खण्ड–2, पृष्ठ–109 सन् 2000*